

नगरीय स्वच्छता अभियान के क्रियान्वयन में सामाजिक एवं प्रशासनिक चुनौतियाँ: झाँसी नगर का समाजशास्त्रीय अध्ययन

रंजना शर्मा^{1*}, डॉ. जंग बहादुर²

1 शोधार्थी, पी.के. विश्वविद्यालय शिवपुरी म.प्र. भारत

ranjanajhs60@gmail.com

2 पर्यवेक्षक, पी.के. विश्वविद्यालय शिवपुरी म.प्र. भारत

सार: शहरी स्वच्छता भारत के तेजी से शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि में लोगों की आजीविका, पर्यावरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) ने शहरी स्वच्छता, अपशिष्ट प्रबंधन और स्वच्छता में क्रांति ला दी है। यह अध्ययन झाँसी के स्वच्छता अभियानों की प्रभावकारिता का आकलन करने के लिए सामाजिक रूप से विश्लेषण करता है। अध्ययन के प्राथमिक डेटा संरचित घरेलू सर्वेक्षण, स्वच्छता कार्यकर्ता और शहर के आधिकारिक साक्षात्कार हैं, जबकि द्वितीयक डेटा वर्तमान सरकारी कागजात और नीतियां हैं। अध्ययन मिश्रित तरीकों का उपयोग करता है। परिणाम स्वच्छता के बुनियादी ढांचे के विकास और डोर-टू-डोर कचरा संग्रह में प्रगति दिखाते हैं, लेकिन स्रोत पर अपशिष्ट पृथक्करण, समुदाय और खुले में शौच शौचालयों की नियमित सफाई और सक्रिय, समावेशी नागरिक भागीदारी की अभी भी कमी है। सामाजिक मुद्दों में अज्ञानता, लंबे समय से चली आ रही स्वच्छता की आदतें और नागरिक उदासीनता स्वच्छता प्रयासों को सीमित करती है। प्रशासनिक मुद्दों में कर्मचारियों की कमी, निगरानी प्रणाली की कमियां और धन की कमी सेवा वितरण को प्रतिबंधित करती है। शोध में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि शहरी स्वच्छता के लिए बुनियादी ढांचे के समाधान, व्यवहार परिवर्तन और उत्तरदायी सरकार की आवश्यकता होती है। परिणाम बताते हैं कि झाँसी में स्थायी स्वच्छता के लिए सामुदायिक भागीदारी, संस्थागत जवाबदेही और सामुदायिक भागीदारी में वृद्धि की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: शहरी स्वच्छता, स्वच्छ भारत मिशन (शहरी), झाँसी, अपशिष्ट प्रबंधन, सामाजिक चुनौतियाँ, प्रशासनिक चुनौतियाँ, शहरी शासन, सार्वजनिक स्वास्थ्य, नागरिक व्यवहार, सतत विकास

1. परिचय

भारत जैसे विकासशील देशों में तेजी से हो रहे शहरीकरण ने शहरी स्वच्छता के मुद्दे को आधुनिक शहरी विकास संवाद में सबसे आगे ला दिया है। जनसंख्या वृद्धि, प्रवास और गिरावट के परिणामस्वरूप हाल के वर्षों में शहरों को स्वच्छ और स्वस्थ रखने की चुनौती बढ़ गई है (शर्मा, आर. के., 2022)। जनसंख्या वृद्धि के साथ शहरों का ठोस अपशिष्ट भार बढ़ता है, जिससे पारिस्थितिक तंत्र के लिए बड़ा खतरा पैदा होता है और बीमारी के प्रसार में सुविधा होती है। इन दिनों, स्वच्छता को केवल एक नागरिक कार्य से कहीं अधिक के रूप में देखा जाता है; यह पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक कल्याण और सतत विकास की आधारशिला है (सिंह, ए., 2021)। यही कारण है कि भारत सरकार ने स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) शुरू

किया: शहरों को स्वच्छ बनाने, लोगों को अपने कचरे के प्रबंधन के लिए वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करने और उनकी आदतों को बदलने के लिए। मिशन के परिणामस्वरूप बुनियादी ढांचे और सेवाओं का विकास किया गया है, लेकिन स्थानीय स्तर पर मिशन को लागू करने के लिए अभी भी कुछ सामाजिक और प्रशासनिक चुनौतियां हैं (गुप्ता, एस., 2020)। झांसी जैसे मध्यम आकार के शहरों में लागू स्वच्छता सुधारों के लाभों और कमियों की जांच एक केस स्टडी में की गई (मिश्रा, वी., 2022)।

1.1 शहरी स्वच्छता की अवधारणा और महत्व

शहरी स्वच्छता का लक्ष्य सार्वजनिक स्वच्छता, पानी और स्वच्छता और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के एकीकरण के माध्यम से स्वच्छ और स्वच्छ रहने की स्थिति प्रदान करना और बनाए रखना है (खान, ए., 2023)। सार्वजनिक और सांप्रदायिक शौचालय, साथ ही अन्य स्वच्छता सुविधाएं, इस प्रणाली का हिस्सा हैं, साथ ही उनका संग्रह, छंटाई, परिवहन, उपचार और निपटान भी हैं। सामाजिक परिप्रेक्ष्य से, स्वच्छता सामूहिक व्यवहार, सांस्कृतिक मानदंडों और नागरिक कर्तव्य से जटिल रूप से जुड़ी हुई है (तिवारी, डी., 2021)। स्वच्छ शौचालयों तक पहुंच होने से सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार होता है, पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव कम होता है और सभी के लिए जीवन स्तर बढ़ता है (चौधरी, एन., 2024)। स्वच्छता व्यापक विकास लक्ष्यों जैसे पर्यावरणीय रूप से सुरक्षात्मक उपायों, सामाजिक और आर्थिक समावेशन और टिकाऊ शहरी क्षेत्रों से भी जटिल रूप से संबंधित है। फिर भी, समुदायों और व्यक्तियों को काम करने के लिए स्वच्छता प्रयासों के लिए अपनी अशुद्ध प्रथाओं को कम करने के लिए तैयार और शिक्षित किया जाना चाहिए (अग्रवाल, पी., 2022)। पारंपरिक सामाजिक आदतें, अज्ञानता और सामाजिक आर्थिक असमानताएं सभी प्रभावी स्वच्छता कार्यान्वयन को रोकने में भूमिका निभाती हैं, जिससे कई शहरी आवासों में स्वच्छता एक जटिल सामाजिक-प्रशासनिक मुद्दा बन जाता है (वर्मा, आर., 2023)।

1.2 झांसी का संदर्भ और अनुसंधान उद्देश्य

झांसी, उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड संभाग में एक विकासशील महानगर, एक जटिल शहरी क्षेत्र है जिसमें सामाजिक आर्थिक विशेषताओं और बुनियादी ढांचे के मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला है। राष्ट्रव्यापी स्वच्छता परियोजनाओं में शहर की भागीदारी के परिणामस्वरूप अपशिष्ट प्रबंधन और सार्वजनिक शौचालय दोनों में सुधार हुआ है (पांडेय, के., 2021)। खराब अपशिष्ट पृथक्करण, स्वच्छता के बुनियादी ढांचे की उपेक्षा, और सार्वजनिक भागीदारी की कमी कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिन्होंने झांसी को व्यापक सार्वजनिक अवमानना की है, जैसा कि उन्होंने समान आकार के कई अन्य शहरों के लिए किया है। ये समस्याएं पहले से ही संसाधनों की कमी या नगर परिषदों के बीच सहयोग जैसी प्रशासनिक बाधाओं को

जोड़े बिना काफी कठिन हैं। इस संदर्भ को देखते हुए, वर्तमान शोध का उद्देश्य झांसी शहर में शहरी स्वच्छता अभियानों का सामाजिक-प्रशासनिक विश्लेषण करना है (यादव, एम., 2020)। स्वच्छता की वर्तमान स्थिति, स्वच्छता को लागू करने में मुख्य चुनौतियाँ और सामुदायिक भागीदारी और शासन का महत्व अध्ययन के उद्देश्य हैं। अध्ययन का व्यापक लक्ष्य उन कमियों पर प्रकाश डालना है जो हमारी वर्तमान समझ में मौजूद हैं कि स्वच्छता के लाभों को प्राप्त करने के लिए क्या करना पड़ता है और शहरी स्वच्छता प्रणालियों की दक्षता और दीर्घायु में सुधार के तरीके सुझाना है।

2. साहित्य समीक्षा

सिंह, डी., (2023) स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) जैसे बड़े पैमाने पर प्रयासों ने स्वच्छता के बुनियादी ढांचे में सुधार किया है, लेकिन सामाजिक मुद्दे बने हुए हैं। विद्वानों का कहना है कि व्यवहार परिवर्तन उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि अपशिष्ट संग्रह; नागरिक अभी भी अपने कचरे का इलाज करते हैं। जागरूकता और प्रोत्साहन की कमी के कारण, मध्यम से बड़े भारतीय शहरों में डोर-टू-डोर संग्रह में वृद्धि के बावजूद स्रोत पृथक्करण कम है। समाजशास्त्रीय अनुसंधान से पता चलता है कि सांस्कृतिक मानदंड, दृष्टिकोण और नागरिक कर्तव्य स्वच्छता को प्रभावित करते हैं। शोध से यह भी पता चलता है कि सार्वजनिक जुड़ाव स्वच्छता अभियानों में मदद करता है। सामुदायिक जागरूकता और निगरानी स्वच्छता में सुधार करती है। हालांकि, झांसी और अन्य शहरों में निरंतर व्यवहार संचार रणनीति का अभाव है, जिससे उनका प्रभाव कम हो जाता है। यह अध्ययन शहरी स्वच्छता प्रणाली संस्थागत परिवर्तनों में सुधार के लिए सामाजिक और नीतिगत ढांचे को संयोजित करने की आवश्यकता पर जोर देता है।

गुप्ता, आर., (2024) शहरी स्वच्छता प्रशासनिक मुद्दे का अध्ययन कई शहरी शासन अध्ययनों में किया गया है, विशेष रूप से विकासशील देशों में। अकुशल शहरी स्थानीय निकाय (यूएलबी) स्वच्छता प्रयासों में बाधा डालते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि अक्षम शहरी स्थानीय निकाय (यूएलबी) स्वच्छता कार्यक्रमों को प्रभावित करते हैं। विभागों के बीच कर्मचारियों, वित्त और संस्थागत सहयोग की कमी व्यापक है। जबकि नीति को राष्ट्रीय स्तर पर समर्थित किया जाता है, निगरानी और जवाबदेही की कमी उत्तरी शहरों में स्थानीय कार्यान्वयन को सीमित करती है, अनुसंधान के अनुसार। सरकार की अक्षमता और नौकरशाही धीमी सेवा प्रतिक्रियाएं। अनुभवजन्य अध्ययनों से पता चलता है कि नगर पालिकाओं में तकनीकी विशेषज्ञता और परिचालन क्षमता की कमी है, जो स्वच्छता सेवाओं में बाधा डालती है। अनुभवजन्य निष्कर्षों के अनुसार, नगरपालिका सुविधाओं को आम तौर पर कम वित्त पोषित किया जाता है और परिचालन क्षमता और तकनीकी अनुभव की कमी होती है, जो स्वच्छता सुविधा के रखरखाव को खराब कर सकती है। विद्वान विकेंद्रीकरण और स्थानीय अधिकारियों को सशक्त बनाने का समर्थन

करते हैं क्योंकि स्वच्छता सेवा उन पर निर्भर करती है। यहां तक कि सबसे अच्छी नीति भी प्रशासनिक सहायता के बिना विफल हो जाती है। थीसिस, प्रकाशनों और लेखों के अनुसार, शासन प्रतिबंध झांसी में स्वच्छता परियोजनाओं को प्रभावित करते हैं।

चौहान, एस., (2022) शहरी स्वच्छता कार्यक्रम की सफलता में सार्वजनिक और सामुदायिक जुड़ाव का पता लगाया है। इन अध्ययनों से पता चलता है कि जागरूकता, शिक्षा और सामाजिक आर्थिक स्थिति स्वच्छता व्यवहार को दृढ़ता से प्रभावित करती है। शोध से पता चलता है कि उच्च सामाजिक आर्थिक समूहों में कचरे का अच्छी तरह से प्रबंधन करने की अधिक संभावना है, जबकि हाशिए पर रहने वाली आबादी अपर्याप्त संसाधनों के कारण संघर्ष करती है। लिंग सार्वजनिक शौचालय के उपयोग और रखरखाव को प्रभावित करता है। शोधकर्ताओं का दावा है कि जागरूकता कार्यक्रम जो हर किसी तक नहीं पहुंचते हैं, अभ्यास अंतर का कारण बनते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि जागरूकता अभियान लोगों तक पहुंचने में विफल रहते हैं, जिससे अभ्यास अंतराल पैदा होता है। भागीदारी योजना और स्वच्छता अभियान ने काम किया है। रुचि की कमी या अनुवर्ती कार्रवाई दीर्घकालिक समय बर्बाद करती है। इस साहित्य से पता चलता है कि झांसी में शहरी सामाजिक जटिलता और विशेषताओं के लिए समावेशी और सहभागी दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

त्रिपाठी, ए., (2021) ऐतिहासिक रूप से, शहरी स्वच्छता अनुसंधान ने नीति निर्माण से ऊपर स्थानीय कार्यान्वयन को प्राथमिकता दी। कई राष्ट्रीय पहलों के इरादे बुलंद होते हैं, लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि स्थानीय अनुकूलन और कार्यान्वयन महत्वपूर्ण हैं। अध्ययनों के अनुसार, रखरखाव, निगरानी और व्यवहार परिवर्तन के बिना, भारतीय शहर के बुनियादी ढांचे में कोई बदलाव नहीं होगा। "स्वच्छता स्थिरता" नामक एक नई अवधारणा भविष्य को वर्तमान से पहले रखती है। स्वच्छता शासन पर उनके प्रभावों के लिए डिजिटल निगरानी प्रणाली और कचरा संग्रह ऐप का अध्ययन किया गया है। कर्मचारियों के प्रतिरोध और प्रशिक्षण की कमी तकनीकी समाधानों को प्लेग करती है। बुनियादी ढांचे, शासन और सामुदायिक भागीदारी वाले अंतःविषय शहर बेहतर प्रदर्शन करते हैं। यह शोध इस आधार का समर्थन करता है कि सफल स्वच्छता प्रबंधन के लिए सामाजिक और प्रशासनिक कारकों को संबोधित किया जाना चाहिए और झांसी स्वच्छता प्रयासों के सामाजिक-जनसांख्यिकीय अध्ययन के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है।

3. कार्यप्रणाली

3.1 अनुसंधान डिजाइन

झांसी शहरी स्वच्छता कार्यक्रम के निष्पादन के दौरान सामाजिक और प्रशासनिक मुद्दों का आकलन करने के लिए वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक उपकरणों का उपयोग किया जाता है। विश्लेषण जागरूकता, भागीदारी और प्रशासनिक दक्षता जैसे चर के कारणों और प्रभावों की जांच करता है, जबकि स्वच्छता अभ्यास, बुनियादी ढांचा, खराब भागीदारी, और अन्य आकस्मिक और गैर-कारण गतिविधियों का वर्णन किया गया है। इस अध्ययन ने मात्रात्मक और गुणात्मक पद्धतियों का उपयोग करके अनुसंधान समस्या की जांच की और पूरक किया। टिप्पणियों और साक्षात्कारों से गुणात्मक डेटा व्यक्तिपरक अनुभव, धारणा और संस्थागत बाधाओं को माप सकता है, जबकि मात्रात्मक डेटा अपशिष्ट और स्वच्छता पैटर्न, प्राप्तकर्ताओं की जागरूकता और धारणा, और संस्थागत बाधाओं को माप सकता है। त्रिकोणासन निष्कर्षों की विश्वसनीयता में सुधार करता है। स्वच्छता और शासन की जांच अनुभागीय रूप से की जाती है, अनुदैर्घ्य रूप से नहीं। नीति कार्यान्वयन पर समाजशास्त्रीय अनुसंधान के लिए आदर्श, पहले शहरी सड़क-स्तरीय समस्या समाधान का सामना करना।

3.2 अध्ययन क्षेत्र और नमूनाकरण

यह अध्ययन बुंदेलखंड के झांसी शहर में आयोजित किया गया है, जो उत्तर प्रदेश में बुनियादी ढांचे की बाधाओं और उच्च जनसंख्या वृद्धि के साथ एक मध्यम आकार का शहर है। झांसी ने राष्ट्रीय शहरी स्वच्छता कार्यक्रमों में बड़े पैमाने पर भाग लिया, जिससे यह कार्यान्वयन के मुद्दों का एक अच्छा उदाहरण बन गया। हमने सामाजिक-आर्थिक, आवासीय और स्वच्छता सेवा कवरेज एकरूपता और विविधता सुनिश्चित करने के लिए शहर के विभिन्न वार्डों से 200 घरों का नमूना लिया। नमूने में संस्थागत और परिचालन तत्वों के लिए 30 स्वच्छता कर्मचारी और 10 नगरपालिका अधिकारी शामिल थे। हमने शहर के अच्छी तरह से परिभाषित स्तरों को आनुपातिक रूप से नमूना देने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण (एसआरएस) को नियोजित किया। नमूना पूर्वाग्रहों को कम करने और प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए सही विधि। मुझे यह पसंद है कि उपयोगकर्ता और प्रदाता के मुद्दों को संबोधित करने के लिए कई उत्तरदाता समूह हैं। अवलोकन योग्य मोड़ के कारण अध्ययन का सामाजिक महत्व है।

3.3 डेटा संग्रह के तरीके

प्राथमिक और द्वितीयक डेटा स्रोत अध्ययन सटीकता और पूर्णता सुनिश्चित करते हैं। संरचित प्रश्नावली का उपयोग करके घरेलू अपशिष्ट निपटान, स्वच्छता जागरूकता और स्वच्छता के दृष्टिकोण पर प्राथमिक डेटा एकत्र किया गया था। स्वच्छता कर्मियों और नगर निगम के कर्मचारियों से उनकी चुनौतियों और प्रशासनिक प्रक्रियाओं के बारे में साक्षात्कार किया गया। सार्वजनिक शौचालयों, कूड़ेदान और खुले डंपिंग का आकलन करने के लिए प्रत्यक्ष अवलोकन भी किया गया था। हाल के सरकारी रिकॉर्ड, शहरी स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन आँकड़े, नगरपालिका दस्तावेज़ और नीति दस्तावेज़ द्वितीयक डेटा प्रदान करते हैं। उन्होंने पृष्ठभूमि प्रदान की और प्राथमिक निष्कर्षों का समर्थन किया। कार्यप्रणाली त्रिकोणासन और अनुसंधान विश्वसनीयता और गहराई कई डेटा संग्रह विधियों का उपयोग करके प्राप्त की जाती है। उत्तरदाताओं के प्रत्येक समूह के लिए समान उपकरण और प्रक्रिया का उपयोग करके डेटा लगातार और निष्पक्ष रूप से एकत्र किया गया था।

3.4 डेटा विश्लेषण तकनीक

इसे समझने के लिए डेटा की मात्रात्मक और गुणात्मक रूप से जांच की गई थी। स्वच्छता की स्थिति, बुनियादी ढांचे तक पहुंच और सार्वजनिक स्वच्छता जागरूकता में पैटर्न खोजने के लिए प्रतिशत, औसत और आवृत्ति वितरण का उपयोग करके घरेलू सर्वेक्षणों से मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण किया गया था। सेवा वितरण और सार्वजनिक भागीदारी में स्थानिक भिन्नताओं की पहचान करने के लिए, वार्डों की तुलना की गई। विषयगत विश्लेषण का उपयोग साक्षात्कार और टिप्पणियों जैसे गुणात्मक डेटा में सामान्य विषयों और पैटर्न को उजागर करने और विश्लेषण करने के लिए किया गया था, जिसमें प्रशासनिक समस्याएं, व्यवहार परिवर्तन प्रतिरोध और बुनियादी ढांचे के मुद्दे शामिल थे। इन विश्लेषणात्मक विधियों के संयोजन से इस बात की पूरी समझ मिलती है कि सामाजिक और प्रशासनिक मुद्दे स्वच्छता परिणामों को कैसे प्रभावित करते हैं। स्पष्टता के लिए जानकारी को व्यवस्थित, सारणीबद्ध और वर्गीकृत किया गया था। विश्लेषणात्मक प्रक्रिया इसे और अधिक तथ्यात्मक बनाने के लिए निष्पक्षता पर जोर देती है, और विश्लेषण को समाजशास्त्रीय रूप से बोधगम्य बनाने के लिए अध्ययन क्षेत्र की जांच में संदर्भ का भी अध्ययन किया जाता है।

4. परिणाम

4.1 घरेलू अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाएँ

यह खंड झांसी के HWAM संग्रह, पृथक्करण और निपटान पैटर्न पर चर्चा करता है। शहरी स्वच्छता कार्यक्रमों ने बुनियादी कचरा संग्रह में सुधार किया है, लेकिन शहरी निवासी असंगत साबित हुए हैं। शहरी स्वच्छता योजनाओं के तहत वृद्धि: अधिकांश घरों ने घर-घर कचरा संग्रह की सूचना दी। इसके बावजूद, स्रोत पर अपशिष्ट पृथक्करण अभी भी व्यापक रूप से ज्ञात नहीं है, इसलिए ज्ञान और कार्रवाई अभी भी डिस्कनेक्ट हो गई है। मेरे क्षेत्र के अवलोकनों से, खुली डंपिंग, विशेष रूप से कम आय वाले क्षेत्रों में, पर्यावरण और स्वास्थ्य के मुद्दों का कारण बनती है। स्वच्छता दिशानिर्देशों की समझ मध्यम है, लेकिन जिम्मेदार व्यवहार की कमी है। उन निष्कर्षों से पता चलता है कि चल रहे व्यवहार परिवर्तन के बिना अकेले बुनियादी ढांचे में वृद्धि अपर्याप्त है।

तालिका 4.1: झांसी शहर में घरेलू अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाएं

संकेतक	प्रतिशत (%)
डोर-टू-डोर संग्रह पहुंच	88%
स्रोत पृथक्करण का अभ्यास किया गया	52%
मिश्रित अपशिष्ट निपटान	48%
ओपन डंपिंग देखी गई	28%
स्वच्छता नियमों के बारे में जागरूकता	67%

4.2 सार्वजनिक स्वच्छता बुनियादी ढांचा

सार्वजनिक स्वच्छता बुनियादी ढांचे का यह हिस्सा शहरों को साफ रखता है और स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं को समाप्त करता है। यह खंड झांसी की सार्वजनिक, सामुदायिक और कचरा बिन स्वच्छता सुविधाओं और वे कैसे काम करते हैं, इसकी जांच करता है। परिणाम दर्शाते हैं कि जबकि कई सुविधाएं हैं, रखरखाव और उपयोग चिंताएं हैं। कई उत्तरदाताओं ने कहा कि खराब रखरखाव, पानी की कमी और स्वच्छता के कारण सार्वजनिक शौचालयों का उपयोग नहीं किया जाता है। कूड़ेदान सामान्य रूप से

मौजूद होते हैं और उन्हें उठाया जा सकता है, हालांकि वे अक्सर ओवरफ्लो हो जाते हैं, जिससे वे कम उपयोगी हो जाते हैं। उपलब्धता और कार्यक्षमता की कमी अपर्याप्त रखरखाव और निगरानी को इंगित करती है। यह सार्वजनिक विश्वास और स्वच्छता कार्यक्रम की प्रभावकारिता को प्रभावित करता है।

तालिका 4.2: सार्वजनिक स्वच्छता बुनियादी ढांचे की उपलब्धता और कार्यक्षमता

सुविधा	उपलब्धता (%)	कार्यात्मक (%)
सार्वजनिक शौचालय	72%	58%
सामुदायिक शौचालय	65%	49%
कचरे के डिब्बे	81%	63%
नियमित सफाई सेवाएं	60%	46%

4.3 प्रशासनिक चुनौतियाँ

शहरी स्वच्छता नीति के निष्पादन के लिए प्रशासन महत्वपूर्ण है। इस खंड में झांसी नगर निकायों की संस्थागत और परिचालन संबंधी कठिनाइयों पर चर्चा की गई है। सफाई कर्मचारियों और सफाई कर्मियों दोनों ने जनशक्ति की कमी के कारण अतिरिक्त बोझ और अक्षमता की सूचना दी, जो एक बड़ी चिंता का संकेत देता है। कम निगरानी, जवाबदेही और असंगत कचरा संग्रह और स्वच्छता सुविधा रखरखाव इसमें योगदान करते हैं। बुनियादी ढांचे और कार्यबल विकास के विपरीत, वित्त एक और बड़ी सीमा है। प्रशासनिक विभागों के बीच समन्वय के मुद्दे भी स्वच्छता कार्यक्रमों में बाधा डालते हैं। ये सभी मुद्दे सेवा वितरण और स्वच्छता प्रभावशीलता को कम करते हैं।

तालिका 4.3: शहरी स्वच्छता कार्यान्वयन में प्रशासनिक चुनौतियां

प्रशासनिक मुद्दा	प्रतिक्रिया (%)
कर्मचारियों की कमी	62%
निगरानी का अभाव	55%

अनियमित अपशिष्ट संग्रह	38%
बजट की कमी	47%
खराब अंतर-विभागीय समन्वय	41%

4.4 सामाजिक चुनौतियाँ

सामाजिक कारक शहरी स्वच्छता परियोजना की सफलता को निर्धारित करते हैं। यह खंड व्यवहार/व्यावसायिक चुनौतियों पर चर्चा करता है जो कार्यान्वयन में बाधा डाल सकती हैं। कई निवासी स्वच्छता और जागरूकता प्रयासों में भाग नहीं ले रहे थे, यह दर्शाता है कि सार्वजनिक भागीदारी एक प्रमुख मुद्दा है। व्यवहार को संशोधित करने की अनिच्छा, जैसे कि सार्वजनिक स्वच्छता का उपयोग करना या कूड़ेदान में कचरा डालना, एक और मुद्दा है। जागरूकता अभियानों के बावजूद कूड़ा फेंकने और कूड़ा फेंकने जैसी नागरिक उपेक्षा बनी हुई है। इसके अलावा, सामाजिक आर्थिक स्थिति गरीब लोगों के लिए स्वच्छता पहुंच और रखरखाव को प्रभावित करती है। ये कुछ सामाजिक मुद्दे हैं जिन पर अच्छी आदतों को बढ़ावा देने के लिए विचार करने और उन तक पहुंचने की आवश्यकता है।

तालिका 4.4: शहरी स्वच्छता प्रथाओं को प्रभावित करने वाली सामाजिक चुनौतियां

सामाजिक मुद्दा	प्रतिशत (%)
जनभागीदारी का अभाव	61%
अलगाव के बारे में खराब जागरूकता	48%
व्यवहार परिवर्तन का प्रतिरोध	53%
नागरिक लापरवाही (कूड़ा)	57%
सामाजिक-आर्थिक बाधाएं	44%

4.5 चर्चा

अध्ययन के अनुसार, बुनियादी ढांचा, प्रशासनिक क्षमता और सामाजिक व्यवहार झांसी में स्वच्छता कार्रवाई प्रभावकारिता को प्रभावित करते हैं। स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) और अन्य कार्यक्रमों ने कचरा संग्रह और स्वच्छता प्रणाली की स्थापना का विस्तार किया, हालांकि आंकड़ों से पता चला कि इसके प्रभावी उपयोग या स्थिरता को सुनिश्चित करने के लिए अकेले बुनियादी ढांचा पर्याप्त नहीं था। उच्च डोर-टू-डोर कचरा पिकअप खराब अपशिष्ट पृथक्करण और उच्च कचरे को कवर किए बिना डंप किए जाने के विपरीत है, जो उपलब्धता बनाम आचरण पर जोर देता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य के मुद्दों में असमान स्वच्छता सुविधा पहुंच और उपयोग शामिल हैं, जो स्वच्छता प्रणाली प्रबंधन, निगरानी और जवाबदेही के मुद्दों का सुझाव देते हैं। अध्ययन में संस्थागत मुद्दों को भी पाया गया है जैसे कि खराब समन्वय, अपर्याप्त कर्मचारी और सीमित संसाधन जो सेवा वितरण को प्रतिबंधित करते हैं। इस बीच, सामाजिक चिंताएं और रिश्ते जो नागरिक कर्तव्य, व्यवहार परिवर्तन और सार्वजनिक भागीदारी की अनदेखी करते हैं, स्वच्छता कार्यक्रमों में बाधा डालते हैं। परिणाम एक राष्ट्रीय पैटर्न का पालन करते हैं जहां स्वच्छता पहल चरण दो (बुनियादी ढांचा) तक पहुंचती है लेकिन व्यवहार और मानदंडों के साथ संघर्ष करती है। शहरी स्वच्छता कार्यक्रमों को बनाए रखने के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण जिसमें बुनियादी ढांचा, जागरूकता अभियान, स्वच्छता कार्यों में सामुदायिक भागीदारी और संस्थागत समर्थन शामिल है, आवश्यक है।

5. निष्कर्ष

सामाजिक विचारों और प्रशासनिक क्षमताओं के कारण, अध्ययन झांसी के शहरी स्वच्छता कार्यक्रम में मिश्रित प्रगति और सीमाओं को दर्शाता है। स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) ने शहरी निवासियों के लिए सार्वजनिक बुनियादी ढांचे, डोर-टू-डोर संग्रह और नीतिगत प्रोत्साहन पर प्रगति की है, लेकिन व्यवहार परिवर्तन और शासन संरचनाओं की कमी उनके प्रभाव को सीमित करती है। अपशिष्ट पृथक्करण अभी भी कम है, सार्वजनिक सुविधाओं को अक्सर बनाए रखा जाता है, और खुली डंपिंग अभी भी आम है, यह साबित करते हुए कि ये सुविधाएं स्वचालित रूप से उनके सही उपयोग को नहीं चलाती हैं। स्टाफिंग, वित्तीय और निगरानी प्रणाली के मुद्दों जैसी प्रशासनिक चुनौतियां स्थानीय कार्यान्वयन में बाधा डालती हैं। हालांकि, लोग अनजान हैं, उनका व्यवहार नहीं बदल रहा है, समुदाय के सदस्य रुचि नहीं रखते हैं, आदि, जो स्वच्छता अभियान की प्रभावशीलता को कम करता है। एक टिकाऊ, स्वच्छ शहर विकसित करने के लिए, बुनियादी ढांचे-केंद्रित समाधानों से व्यवहार परिवर्तन, सार्वजनिक जुड़ाव और संस्थागत जिम्मेदारी को शामिल करते हुए एक अधिक एकीकृत समाधान के लिए एक नागरिक बदलाव की आवश्यकता है। विकेंद्रीकृत शासन, सार्वजनिक भागीदारी और निगरानी और सेवाएं प्रदान करने के

लिए तकनीकी समाधान दक्षता और पारदर्शिता में सुधार कर सकते हैं। झांसी जैसे शहरों में, शहरी स्वच्छता एक सामाजिक जिम्मेदारी है, न कि केवल एक नीति, अगर प्रभावी शासन और सक्रिय भागीदारी को जोड़ा जाए।

संदर्भ

1. शर्मा, आर. के. (2022). शहरी स्वच्छता और नागरिक भागीदारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन। *भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा*, 58(3), 210–225।
2. सिंह, ए. ए., एवं वर्मा, पी. (2021). स्वच्छ भारत मिशन का शहरी क्षेत्रों में प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. *जर्नल ऑफ अर्बन स्टडीज*, 12(2), 95–110।
3. गुप्ता, एस. (2020). शहरी स्वच्छता प्रबंधन और प्रशासनिक चुनौतियाँ। नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
4. मिश्रा, वी. (2022). नगर निकायों की भूमिका और स्वच्छता अभियान. *लोक प्रशासन जर्नल*, 44(1), 66–82।
5. खान, ए., एवं अली, एस. (2023). शहरी गरीब बस्तियों में स्वच्छता की स्थिति: एक क्षेत्रीय अध्ययन. *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क*, 84(2), 150–168।
6. तिवारी, डी. (2021). शहरी विकास और स्वच्छता: नीति एवं व्यवहार. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
7. चौधरी, एन., एवं यादव, एस. (2024). शहरी स्वच्छता में सामाजिक व्यवहार और जनभागीदारी का अध्ययन. *समाज विज्ञान पत्रिका*, 15(2), 101–118।
8. अग्रवाल, पी. (2022). ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और शहरी प्रशासन की चुनौतियाँ. *भारतीय लोक प्रशासन समीक्षा*, 47(1), 55–72।
9. वर्मा, आर. (2023). नगर निगमों की कार्यप्रणाली और स्वच्छता अभियान. *अर्बन गवर्नेंस जर्नल*, 9(1), 33–49।
10. पांडेय, के., एवं शुक्ला, आर. (2021). शहरी स्वच्छता में जागरूकता और व्यवहार परिवर्तन का विश्लेषण. *सामाजिक अनुसंधान जर्नल*, 18(3), 140–156।

11. यादव, एम. (2020). शहरी गरीब और स्वच्छता सेवाओं की उपलब्धता। *समाज और विकास*, 22(2), 88–104।
12. सिंह, डी. (2023). स्वच्छता अभियान में प्रशासनिक दक्षता का मूल्यांकन. *लोक नीति अध्ययन*, 11(2), 75–92।
13. गुप्ता, आर., एवं सिंह, पी. (2024). शहरी ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याएँ और समाधान. *पर्यावरण अध्ययन पत्रिका*, 29(1), 60–78।
14. चौहान, एस. (2022). शहरी जीवन गुणवत्ता और स्वच्छता का संबंध। *भारतीय सामाजिक अध्ययन जर्नल*, 36(4), 200–215।
15. त्रिपाठी, ए. (2021). स्वच्छ भारत अभियान और शहरी समाज: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. *समाजशास्त्र वार्षिकी*, 10(1), 45–63।